ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
एक ऐसी जीवनपद्धति है
जो किसी जीव को, चाहे वो
भूमि, जल अथवा वायु का हो
भय, पीड़ा अथवा मृत्यु नहीं पहुँचाती

वर्ष 13 अंक 1, बसंत 2023
करुणा-मित्र
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी – भारत की पत्रिका
प्राणी अधिकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक धर्मार्थ ट्रस्ट

सम्पादकीय

अक्वेरियम, ओशनेरियम, सागर विश्व, जल एवं थीम पार्क के भीतर

आये दिन हम आपको बताते रहते हैं कि हम किस प्रकार अन्य प्राणियों के प्रति करुणा से पेश आ सकते हैं, कैसे हम उनके प्रति हम ारी चिंता की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। साथ ही हम सरकार को भी सचेत करते रहते हैं कि उनके किसी गलत कदम की वजह से प्राणी विश्व, पक्षी विश्व खतरे में कैसे आ सकता है। उसके निवारण हेतु वे क्या कर सकते हैं। ऐसी ही एक कार्रवाई का सहभागी होना हमें अच्छा लगा था। आपको याद होगा कि ग्रीष्म, 2017 के करुणामित्र के अंक में हमने सम्पादकीय लेख के द्वारा सोमनाथ के समुद्री तट पर गुजरात सरकार ने ₹350 करोड़ की लागत से ओशनेरियम के निर्माण की योजना प्रस्तावित की थी। हालाँकि, हमारे जैसी संस्थाओं और जनसामान्य में उठे विरोध के चलते अंततः गुजरात शासन ने अपनी प्रस्तावित योजना खारिज कर दी थी। बी डब्ल्यू सी ने अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से जनजागृति का कार्य किया एवं गुजरात सरकार को पत्र लिखकर योजना को निरस्त करने के लिए आग्रह किया था।

बर्लिन के रेडीसन कलेक्शन्स होटेल में आक्वाडोम। तसवीर सौजन्य: Stefan le Breton, flickr.com

उस समय शासन को और कुछेक लोगों को आशंका रही होगी कि इस विरोध का क्या तुक है। हाल ही में सुर्ख़ियों में आये एक समाचार के कारण प्रवर्तमान ऐसी योजनाओं और भविष्य में होने वाली प्रस्तावित योजनाओं के विरोध का सूर और भी प्रबल हो गया है।

विगत 16 दिसम्बर 2022 को बर्लिन के रेडिसन कलेक्शन ब्लू होटल में स्थित 50 फिट ऊँचा और 38 फिट चौड़ा विशाल बेलनाकार (सिलिण्ड्रीकल) अक्वेरियम बहुत बड़े विस्फोट के साथ टूटकर ध्वस्त हो गया। विस्फोट का कारण अभी तक पता लग नहीं पाया है। आक्वाडोम नामक उक्त विशाल मछलीघर में 100 से अधिक विभिन्न प्रजातियों की 1,500 मछलियाँ कैद थीं। मृत मछलियों की और मृत:प्राय मछलियों की छटपटाहट व व्याकुलता का कितना दारुण दृश्य था! ज्ञातव्य है कि उक्त आक्वाडोम 2003 में आरम्भ हुआ था और उसे गिनेज़ वर्ल्ड रिकार्ड्स के द्वारा दुनिया का सर्वाधिक विशाल सिलिन्ड्रिकल अक्वेरियम घोषित किया गया था।

मनुष्य होने के नाते हम अक्सर सुविधापूर्वक भूल जाते हैं कि मनुष्यों को छोड़कर किसी और जीवों का भी इस पृथ्वी पर अधिकार है। वास्तव में कुदरत ने हमें यह पृथ्वी सह-अस्तित्व की शर्त पर रहने को दी है। अन्य प्राणियों का भी इस पृथ्वी पर हम मनुष्यों के जितना ही अधिकार है। कुदरत ने हम मनुष्यों को अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक शक्ति, अधिक दिमागी ताकत प्रदान की है, उस स्थिति में हमारा कर्तव्य बनता है कि हम अन्य प्राणियों का अपने निजी स्वार्थ के लिए शोषण न करते हुए उनके प्रति अनुकंपा रखें, समानुभूति रखें, आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सुरक्षा प्रदान करें।

ध्यान रहे कि चिड़ियाघर, मछलीघर या अक्वेरियम इनके लिए सुरक्षाप्रदायक स्थान नहीं है। वास्तव में चिड़ियाघर भूमि पर चलने वाले पशुओं और पक्षियों के लिए कारागृह हैं। उसी प्रकार अक्वेरियम, आदि जलचर जीवों के लिए आजीवन अन्तर्जलीय कारागृह हैं। वहां पर वे ही लोग जाना पसंद करते हैं, जोकि, चिड़ियाघर में जाने के आदि हैं। अक्वेरियम में शार्क, व्हेल, ईल, स्वॉर्डफ़िश, गोल्डफिश, आदि आकर्षक जीवों समेत विभिन्न समुद्री जीव रखे जाते हैं।

समुद्री जीवों का निरंतर प्रदर्शन करने वाले स्थानों में केलिफोर्निया, अमेरिका स्थित सी वर्ल्ड बेहद मशहूर है। उसके जैसे स्थानों की एक सच्चाई हम आपको पहली बार बताते हैं। वहां के बंदी जलचरों को नियमित रूप से बेहोशी की दवाई दी जाती है। उदहारण के तौर पर ओरका नामक व्हेल मछलियां तनावपूर्ण स्थिति में रहने के कारण आक्रामक बन जाती हैं। बंदी अवस्था में वहां के प्रशिक्षक उन्हें शांत रखने के लिए लगातार औषधि देते रहते हैं। बंदी अवस्था में उनका संक्रमणग्रस्त होना स्वाभाविक है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी जीवन-अवधि कम हो जाती है। जबकि, मुक्त और सामान्य अवस्था में अपने नैसर्गिक वातावरण में सौ वर्षों की जीवन-अवधि तक वे जी लेते हैं।

जिस समुद्री टंकी में उन्हें प्राय: रखा जाता हैं, वे सामान्यतया चार फूट ऊँची और चार फूट चौड़ी होती है। स्वतंत्रता का अभाव और कृत्रिम प्रकाश के कारण उन्हें अप्रिय स्थिति झेलनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त

विनष्ट आक्वाडोम और मृत मछली। *तसवीर सौजन्य:* nypost.com

बेंगलुरु के राष्ट्रीय फेमिली फेयर में समुद्री टनल अक्वेरियम।
तसवीर सौजन्य: Jithendra M, indianexpress.com

पारदर्शी कांच/एक्रिलिक की दीवार, जिसमें वे कैद होते हैं, उन्हें भ्रमित करती हैं, जिसे वे दीवार के रूप में देख न पाने के कारण बारबार उसके साथ टकरा कर अपने चेहरे को चोट पहुंचाते रहते हैं।

कुछ अक्वेरियम स्वायत्त (standalone) होते हैं, तो कुछेक बड़े चिड़ियाघर का हिस्सा होते हैं और मूलतः ताज़ा पानी या खारे पानी में स्थित होते हैं। इनमें से स्वायत्त अक्वेरियम में नदी से प्राप्त मछलियाँ और वनस्पति ठंडे या गुनगुने पानी में रखी जाती हैं। जबकि, अन्य में समुद्र और महासागर से प्राप्त मछलियाँ रखी जाती हैं। स्वाभाविकतया, ऐसे अक्वेरियम समुद्रतट के नजदीक स्थित होने चाहिए, ताकि, उन्हें समुद्री जल की आपूर्ति सरलता से हो पाये।

हालांकि, विश्व के विभिन्न भागों में स्थित आधुनिक सुविधाओं से सज्ज अक्वेरियम में लाखों लिटर पानी उपलब्ध होता है, फिर भी उनके कुदरती आवास समुद्र की अपेक्षा वह कम ही होता है, विशेष कर व्हेल, शार्क और डोल्फिन जैसी विशालकाय मछलियों के लिए। दिसम्बर 2022 में रात्रि के दौरान ही तापमान -6° C तक गिर जाने की वजह से बर्लिन स्थित आक्वाडोम की 52 फिट ऊँची टंकी में दरार हो जाने से फट गई। उस टंकी में दस लाख लिटर से भी अधिक पानी था, जिसमें 100 से अधिक प्रजातियों की 1,500 मछलियाँ थीं। उनमें से अधिकाँश मछलियाँ मर गई।

मछलीघर में मुलाकातियों को आकर्षित करने के लिए मछली के साथ तैरने की, उन्हें खिलाने की, उन्हें छूने तक की छूट दी जाती है। पहले पहल तो इन्हें बंदी अवस्था में रखना ही गलत है। परन्तु, इस प्रकार बहुत सारे लोगों को उनके निरंतर निकट जाने देना इन मासूम जीवों के लिए तनावपूर्ण रहता है।

भारत में अक्वेरियम

पुणे 2011 में walk-in अक्वेरियम स्थापित करने की योजना की खबर पाकर तुरंत ही ब्यूटी विदाउट क्रूअल्टी ने महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और पुणे नगरनिगम आयुक्त से उक्त परियोजना को विभिन्न कारण देकर सफलतापूर्वक निरस्त किया।

इन कारणों में प्राणियों के प्रति क्रूरता, परियोजना को कार्यान्वित करने में होने वाली उच्च लागत के अतिरिक्त निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया किः

- अक्वेरियम कहीं भी स्थित हो, कितना भी विशाल हो, आख़िरकार, वह जलीय जीवों का कारागार ही है। जलीय जीव अपनी इच्छा और क्षमता के अनुसार जितनी दूर तक समुद्र में तैर सकते हैं, वह आज़ादी उन्हें यहाँ प्राप्त नहीं है।
- विश्व भर के 85% अक्वेरियम में स्थित जलीय जीवों को साइनाइड विष देकर पकड़ने की पद्धति अपनाई जाती है, जिसके कारण विष दिए जाने के एक सप्ताह में ही 90% जीव मर जाते हैं।
- बचे हुए जीव अपने परिवार और परिवेश से अलग हो जाने कारण और नितांत अजनबी और अनैसर्गिक पर्यावरण में स्वयं को ढालने में तनावपूर्ण और नुकसानदेह महसूस करते हैं।
- अक्वेरियम के पिंजरे की कांच की दीवारों को पहचान न पाने की सूरत में वे स्वयं को चोट पहुंचाते हैं।

उन्हें अस्वाभाविक आहार, तापमान, प्रकाश और पानी ग्रहण करने के लिए मजबूर किया जाता है, फलतः वे संक्रमक रोगों के शिकार हो जाते हैं। प्रस्तावित touch pool (स्टार फिश को छूने की छूट देने वाले अक्वास्केप) मनुष्यों के लिए संक्रमक सिद्ध हो सकते हैं।

- यह कभी बताया नहीं जाता है कि तमाम अक्वेरियम में जलीय जीवों की मृत्यु दर बहुत ऊँची है। जलीय जीवों को बार बार बदलना पड़ता हैं। इस प्रकार अक्वेरियम चलाने के लिए नये जीवों की खरीद करना भी महंगा पड़ता है।
- जलीय जीवों के आवास समान अक्वेरियम (चाहे उसमें जलीय जीवों के प्राकृतिक आवास समान वातावरण क्यूँ न खड़ा किया गया हो!) शिक्षा और संरक्षण का उपयुक्त स्थान है, ऐसा मानना एक मिथक है। वास्तव में ये मनुष्यों के द्वारा व्यापारिक शोषण और शिक्षा के नाम पर कुशिक्षा की गाथा कहते हैं। ये संरक्षण के मामले में किसी भी रूप में सहायक सिद्ध नहीं होते हैं।

निष्कर्ष यही है कि सभी अक्वेरियम बंद कर दिए जाने चाहिए और किसी भी सूरत में नए स्थापित नहीं होने चाहिए। कोई भी प्राणी बंदी अवस्था में सुरक्षित नहीं होता है। कारागार में प्राणी कैदी अवस्था में दु:खी ही होते हैं।

सदमा और यातना

व्यक्तिगत आवासों और व्यवसायी कार्यालयों में मुलाकातियों को प्रभावित करने हेतु शौकिया तौर पर छोटे अक्वेरियम सजाकर रखते हैं, जिसमें मछलियाँ (और जलीय पौधे) होते हैं। ये मछलियाँ नियमित भोजन देने में लापरवाही के कारण मर जाती हैं। कुछेक मछलियाँ ताज़ा पानी संचारित करने वाले पम्प के बंद पड़ जाने के कारण मर जाती हैं। ऐसे अक्वेरियम में कैद मछलियाँ मनुष्यों की भाँति ही सदमे और यातना से ग्रस्त रहती हैं।

भरत कापडीआ
संपर्क: *editorkm@bwcindia.org*

जैन व्हीगन व्यंजन

इस स्तंभ के अंतर्गत जैन व्हीगन व्यंजन बनाने की विधि प्रस्तुत है। यदि आप भी कोई रेसिपी भेजना चाहते हैं, तो पत्र/ई-मेल के द्वारा भेजें। व्हीगन से हमारा तात्पर्य यह है कि शाकाहारी लोगों की ऐसी श्रेणी, जोकि खाने-पीने में प्राणिज पदार्थ से बनी किसी भी वस्तु के प्रयोग से दूर रहते हैं। निम्नदर्शित व्यंजन आपकी प्रतिरक्षा (इम्यूनिटी) सिस्टम को न केवल बढ़ावा देती हैं, आरोग्यप्रद और स्वादिष्ट भी हैं।

पत्तागोभी/बंदगोभी

पत्तागोभी में सल्फ़ोराफेन नामक रसायण, जोकि कैंसर प्रतिराधेक एंज़ाइम को बढ़ावा देता है, भरपूर मात्रा में हैं।

पत्तागोभी के नियमित सेवन से कोलेस्ट्रोल में कमी होती है। हरी और लाल पत्तागोभी, दोनों के अद्‌भुत आरोग्य-लाभ हैं। 2012 के एक अध्ययन से पता चला है कि कच्ची और कम पकाई गई पत्तागोभी कैंसर-प्रतिरोधक सिद्ध हुई है, जबकि, माइक्रोवेव में पकाने पर पत्तागोभी के लाभ में कमी होना पाया गया है। पत्तागोभी को कच्ची, भांप में पकाई, उबाली हुई या हल्की आंच पर तली हुई, किसी भी रूप में खाई जा सकती है।

पत्तागोभी कूटू

सामग्री

1/2 कप मूंग दाल
3 कप काटी गई पत्तागोभी
1/4 छोटा चम्मच हल्दी
3 कप पानी
1/4 कप कसा हुआ नारियल
2 हरी मिर्च
1 छोटा चम्मच जीरा
3 बड़े चम्मच वोटर सोल्ट
1 बड़ा चम्मच तेल
1/2 छोटा चम्मच राई
1/2 छोटा चम्मच उड़द की दाल
1 चुटकी हींग
10 कड़ी पत्ता
2 बड़े चम्मच हरी धनिया पत्ती
नमक स्वाद अनुसार

बनाने की विधि

मोटे तल्ले वाले बर्तन में मूंग दाल, पत्तागोभी, हल्दी और पानी मिलाएं और उन्हें धीमी आंच पर पकाएं, जब तक कि वह पक न जाएँ। इसे ठीक से मसलें।

इसमें मूंगफली का तेल, मिर्च, जीरा और पानी की पेस्ट एवं नमक मिलाएं। और 5 मिनट तक हिलाते हुए पकाते रहिये। आवश्यकता पड़ने पर थोड़ा सा पानी भी मिलाएं।

तड़के के लिए राई, उड़द दाल, हींग और कड़ी पत्ता तेल में फ्राय करें। इसे पत्तागोभी कूटू के उपर डालें और 5 मिनट तक इसे ढक कर रखें। धनिया पत्ती से सजाएँ और भांप में पकाएं। चावल के साथ परोसें।

बी डब्ल्यू सी द्वारा जांचे-परखे व आस्वाद किये गए स्वादिष्ट व्यंजनों की विधि का संकलन देखने के लिए कृपया *www.bwcindia.org/Web/Recipes/Recipesindex.html* की मुलाकात लें।

प्रकाशक: डायना रत्नागर,
अध्यक्षा, ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
सम्पादक: भरत कापडीआ
डिझाईन: दिनेश दाभोळकर
मुद्रण स्थल: श्री मुद्रा
181 शुक्रवार पेठ, पुणे 411002

करुणा-मित्र
का प्रकाशनाधिकार
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी के पास सुरक्षित है।
प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना
किसी भी प्रकार से किसी भी मुद्रित सामग्री
की अनधिकृत प्रतिकृति करना प्रतिबंधित है।

करुणा-मित्र प्राणिज पदार्थ-रहित कागज़
पर मुद्रित किया जाता है,
और प्रत्येक
बसंत (फरवरी), ग्रीष्म (मई),
वर्षा (अगस्त) एवं शिशिर (नवम्बर)
में प्रकाशित किया जाता है।

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
4 प्रिन्स ऑफ वेल्स ड्राइव, वानवडी, पुणे 411 040
+91(20) 2686 1166 **+91 74101 26541**
admin@bwcindia.org **bwcindia.org**

Scan me

निजी प्रचलन हेतु Reg. No. 022203/30/86/AL/TC